



## संस्कृति और नैतिकता का बदलता स्वरूप।

**Godhu Ram Saini, Scholar, University of kota. Kota**

संस्कृति और नैतिकता के बदलते स्वरूप समय के साथ सामाजिक मूल्यों, विश्वासों और प्रथाओं में बदलाव को संदर्भित करते हैं। ये परिवर्तन विभिन्न कारकों से प्रेरित हो सकते हैं, जिन में तकनीकी प्रगति, आर्थिक विकास, वैश्वीकरण और सामाजिक आंदोलन शामिल हैं। इन बदलावों के कुछ प्रमुख पहलुओं में शामिल हैं:

1. वैश्वीकरण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान सांस्कृतिक संलयन: यात्रा, मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से बढ़ती कनेक्टिविटी ने सांस्कृतिक संलयन को जन्म दिया है, जहां विभिन्न परंपराओं, धर्मों और विचारधाराओं के तत्वों का विलय होता है।

वैश्विक मूल्य: जैसे-जैसे दुनिया अधिक परस्पर जुड़ी हुई है, मानव अधिकार, लैंगिक समानता और पर्यावरणीय स्थिरता जैसे मूल्यों को व्यापक स्वीकृति मिली है, यहां तक कि उन समाजों में भी जहां इन्हें पहले प्राथमिकता नहीं दी गई थी।

2. तकनीकी प्रगति

संचार और सोशल मीडिया: सोशल मीडिया जैसे प्लेटफार्मों ने व्यक्तियों के अपने विश्वासों को व्यक्त करने और नैतिक बहस में शामिल होने के तरीके को तेजी से बदल दिया है।

प्रौद्योगिकी में नैतिक दुविधाएँ: जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित होती है, नए नैतिक प्रश्न उठते हैं, जैसे कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, गोपनीयता अधिकार और आनुवंशिक संशोधन से जुड़े प्रश्न।

3. राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में बदलाव नागरिक अधिकार आंदोलन: पूरे इतिहास में, नस्लीय, लिंग और एलजीबीटीक्यू + समानता की वकालत करने वाले सामाजिक आंदोलनों ने स्थापित मानदंडों को चुनौती दी है और नैतिकता पर सामाजिक विचारों को नया आकार दिया है। धर्मनिरपेक्षीकरण: कई समाजों में धर्मनिरपेक्षता की ओर रुझान रहा है।